शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ४६ : नई दिल्ली : ११-१७ मार्च २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी जसोल की ओर विहार करते हुए मगरतलाव पधार गए हैं। आगामी २४ अप्रेल को बालोतरा में अक्षयतृतीया का आयोजन होगा, जिसमें सैकड़ों तपस्वी भाई-बहन वर्षीतप का पारणा करेंगे। ३० अप्रेल को बालोतरा में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के चतुर्थ चरण का आयोजन होगा। इस अवसर पर देश के विभिन्न संभागों से समागत हजारों-हजारों लोग अपने आराध्य की अभ्यर्थना करेंगे।

ije J); vkpk;iooj dk ikou ikFk;

परम पावन आचार्यप्रवर ६ मार्च को पाली जिले के डायलाना ग्राम में पधारे। फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी के अवसर पर पूज्यप्रवर ने साधु-साध्वियों की उपस्थिति में हाजरी का वाचन करते हुए जो पाथेय प्रदान किया, वह यहां प्रस्तुत है--

"संबोधि के चौदहवें अध्याय में कहा गया है--

vl;e ifjR;T; l;eLru l0;rkeA
vl;ek egnnD[k l;e l[keÙkee Ï

जैन वाङ्मय में कहा गया है--असंजमं परियाणामि संजमं उवसंपज्जामि। अध्यात्म की साधना है असंयम को छोड़ देना और संयम को स्वीकार कर लेना। जीवन में जितना असंयम है, उतना-उतना दुःख का कारण जीवन में तैयार हो जाता है। असंयम दुःख है और संयम सुख का कारण है, संयम अपने आप में सुख भी है, इसलिए मनुष्य को चाहिए कि आत्मोत्थान के लिए वह असंयम का परित्याग करे और संयम को स्वीकार करे। गृहस्थ जीवन में संयम की पूर्णाराधना तो प्रायः कठिन है। साधु संयम की विशिष्ट साधना के लिए कृतसंकल्प होता है, इसलिए साधु को पंडित कहा जा सकता है। पंडित शब्द का समान्य अर्थ तो विद्वान् या विज्ञ है, परन्तु जैन वाङ्मय में पंडित शब्द का एक पारिभाषिक अर्थ करते हुए विरति अर्थात् संयम की अपेक्षा आदमी को पंडित कहा गया है। बहुत पढ़ा-लिखा न हो, किन्तु जीवन में पूर्ण संयम स्वीकार किया हुआ है तो वह पंडित कहलाने का अधिकारी होता है और जिसके जीवन में असंयम है, संयम नहीं है, वह बाल कहा जाता है। श्रावक में संयम भी कुछ अंशों में होता है और असंयम भी कुछ अंशों में होता है, इसलिए श्रावक को बालपंडित कहा जाता है। यह आगम की बात मैं आपको बता रहा हूं। अनंतकाल की यात्रा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षण वह होता है, जब आदमी साधु बनता है। हमारी आत्मा कितने जन्म-मरणों में चक्रभूत बनकर आगे बढ़ती आ रही है। इसकी कोई आदि नहीं है। हमारी आत्मा अनादिकाल से भ्रमण कर रही है।

इस अनादि संसार में आत्मा को जब कभी संयम को स्वीकार करने का मौका मिलता है, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समय होता है। जैन शासन में कितने-कितने साधु-साध्वियां हैं, जो संयम की साधना कर रहे हैं। दिगंबर समाज में साधु या मुनि और आर्यिकाएं आदि हैं। वे भी अपने ढंग से साधना करती हैं और श्वेताम्बर समाज में, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी तथा तेरापंथ शासन में कितने साधु-साध्वियां हैं। सबके अपने-अपने विधान हैं, अपनी-अपनी मान्यताएं हैं, अपनी-अपनी आराधना पद्धतियां हैं, परंतु मेरा तो यह मत है कि

सभी का लक्ष्य आत्मसाधना का रहे। आत्मसाधना के विषय में किसी प्रकार का मतभेद नहीं रहना चाहिए।

साधना क्या है? कषाय का मंदीकरण साधना है। राग-द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ--इनको मंद करने का अभ्यास करना साधना है। यह अभ्यास सभी साधु-साध्वियों को करना चाहिए, भले ही वे आचार्य हों, उपाध्याय या प्रवर्तक हों, कषाय मंदता की साधना तो सबके लिए करणीय है, स्वीकर्तव्य है। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अचौर्य--इस आचार के प्रति जागरूक रहना साधना है।

साधु को अपने आचार के प्रति जागरूक रहना चाहिए। आचार के प्रति जागरूकता साधु को पाप से बचाने वाली होती है। हमारी मर्यादाएं बड़ी सुन्दर हैं। आज कार्यक्रम में हमारे साथ रहने वाले प्रायः सभी साधु-साध्वियां उपस्थित हैं। हम इसे आम भाषा में 'हाजरी' कहते हैं। हाजरी का मतलब सभी साधु-साध्वियों की सामान्यतया उपस्थिति। इसमें जो वाचन किया जाता है, उसका नाम भी हाजरी पड़ गया।

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह--ये पांच महाव्रत हैं। ईर्या, भाषा, एषणा, आदाननिक्षेप, उत्सर्ग--ये पांच समितियां हैं। मनोगुप्ति, वाक्गुप्ति और कायगुप्ति--ये तीन गुप्तियां हैं। ये कुल तेरह नियम साधु का आचार हैं। साधु अपनी समिति-गुप्तियों के प्रति या कहें नियमों के प्रति जागरूक रहे। संघबद्ध साधना कर रहे हैं तो संगठन की भी कुछ मर्यादाएं हैं। हमारे धर्मसंघ में माघ शुक्ला सप्तमी को मर्यादा महोत्सव मनाया जाता है। इस बार वह मेवाड़ के आमेट में मनाया गया। इस अवसर पर काफी बहिर्विहारी साधु-साध्वियां निर्देशानुसार आचार्य के पास पहुंचते हैं। उनके बीच मर्यादाओं पर चर्चा, उनका वाचन आदि होता है।

तेरापंथ धर्मसंघ में कुछ विशिष्ट मर्यादाएं हैं, उनमें पांच को विशेष स्थान दिया जाता है। उनमें प्रथम है--**lo lkèk&lkfèo;k ,d vkpk; dh vkKk e jgA**

आचार्य की आज्ञा का कभी भी किसी भी प्रकार से उल्लंघन नहीं होना चाहिए। कठिनाई हो तो अपनी बात आचार्य को निवेदित कर दें। दूसरा आदेश मिल जाए तो बात दूसरी, किन्तु वही आज्ञा लागू है तो कुछ कठिनाई भोग कर भी आज्ञा का पालन करना साधु-साध्वियों का कर्तव्य है। इस प्रकार गुरु आज्ञा के प्रति निष्ठा का भाव रहे।

इधर आत्मा की साधना करनी है तो आत्मनिष्ठा अर्थात् आत्मा के कल्याण के प्रति निष्ठा रहे। संघ में रहें तो संघ और शासन के प्रति निष्ठा रहे। व्यक्ति नहीं, शासन या संघ बड़ा होता है। 'यूनिटी इज स्ट्रेंथ। एकता में शक्ति होती है। इसलिए व्यक्ति नहीं, संघ बड़ा है। संघ को अपनी सेवा देने की निष्ठा और भावना होनी चाहिए।

निष्ठाएं पांच हैं। उन्हें अच्छी तरह से समझ लें--आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, आचारनिष्ठा और मर्यादानिष्ठा। इन्हें हम पांच निष्ठाओं का अमृत या निष्ठापंचामृत भी कहते हैं। इसका हमें पान करना चाहिए।

वैसे तो संघ में साधु-साध्वियां हैं। किन्तु गुरुदेव तुलसी ने संघ में एक और श्रेणी स्थापित की--समणश्रेणी। इस श्रेणी में दीक्षित समण-समणियां कहलाते हैं। यहां भी कुछ समणियां बैठी हैं। ये वैसे तो साध्वियां नहीं हैं। साध्वियों के बाद की श्रेणी है। फिर भी ये सब संन्यासिनियां हैं, घर का त्याग कर चुकी हैं, घर से इनका संबंध-विच्छेद हो गया है। ये संघ में रहकर साधना करती हैं और अपनी साधना के साथ परोपकार का कार्य भी करती हैं। धर्माराधना और धर्मप्रचार के संदर्भ में इनकी सारी क्रियाएं आचार्य की आज्ञा में हैं। आचार्य की आज्ञा से ये स्थान-स्थान पर पहुंचती हैं, धर्माराधना करती और कराती हैं। साधु-साध्वियां जैसे बिना आज्ञा चतुर्मास-प्रवास अथवा यात्रा नहीं कर सकते, वैसे ही समण-समणियां भी आज्ञा के बिना प्रवास या यात्रा नहीं कर सकते।

दूसरी मर्यादा है--**fogkj prekl vkpk; dh vkKk l djA** मर्यादा महोत्सव के अवसर पर चतुर्मास घोषित होते हैं। आचार्य के द्वारा आदेश होते ही साधु-साध्वियां यथासमय विहार कर दें और यथासमय

www.jvbharati.org

अपने चातुर्मासिक स्थान पर पहुंच जाएं। विहार, चतुर्मास का निर्णय वे अपने मन से नहीं कर सकते। जहां आचार्य कहें, वहां चतुर्मास करना है। विद्वान् साधु-साध्वियां हों, बहुत पढ़े-लिखे हों, अच्छे घरानों के हों, सबके लिए यह सामान्य विधि है कि चतुर्मास और विहार वहीं करो, जहां के लिए आचार्य की आज्ञा है।

तीसरी धारा है--**viuk&viuk f"k";&f"k";k u cuk,A** कोई भी साधु-साध्वी अपना शिष्य-शिष्या न बनाए। वर्तमान में प्रायः दीक्षाएं आचार्यों के पास होती हैं, फिर भी आचार्य की ओर से किसी को दीक्षा देने का आदेश हो जाए तो आज्ञा से दीक्षा देने के बाद चेला या चेली दीक्षा देनेवाले मुनि या साध्वी का नहीं, चेला या शिष्य तो आचार्य का ही होगा। दीक्षा तो आचार्य की आज्ञा से दी जा सकती है, किन्तु चेले या चेली तो एक गुरु के ही होंगे। दीक्षा के बाद यथासमय यथावसर उसे गुरु को सौंपना होता है।

गुरुदेव तुलसी विराजमान थे। हम सभी लोग उनके शिष्य-शिष्याएं थे। गुरुदेव महाप्रज्ञजी विराजमान हुए तो हम सब उनके शिष्य-शिष्याएं थे। जो गुरु या आचार्य हो, सब उनके शिष्य-शिष्याएं होते हैं। आचार्य से दीक्षा में कोई बड़ें हों तो उनके लिए सामान्यतया शिष्य शब्द काम में न लेकर 'आज्ञानुवर्ती' शब्द का प्रयोग किया जाए। दीक्षा में छोटे साधु-साध्वियां शिष्य या शिष्या कहलाने के अधिकारी तो हैं ही, बड़ों के लिए एक पारिभाषिक शब्द आज्ञानुवर्ती और स्थूल भाषा में कहें सब साधु-साध्वियां एक आचार्य के शिष्य और शिष्याएं हैं। बड़े हैं तो भी स्थूल भाषा में एक आचार्य के शिष्य-शिष्याएं कहे जाते हैं।

हमारे धर्मसंघ में आचार्य भिक्षु इस संघ के जन्मदाता या संस्थापक हुए। अभी हम केलवा में चतुर्मास करके आए हैं। वहां एक अन्धेरी ओरी है। उसी केलवा में महामना आचार्य भिक्षु के द्वारा तेरापंथ की स्थापना हुई थी। आचार्य भिक्षु के पास कोई ऐसा प्रज्ञा का बल था, कोई साधना का बल था, जिसके कारण उन्होंने ऐसे विधान की रचना की, जिसके आधार पर यह संघ चल रहा है। तेरापंथ के साधु-साध्वियों को भी साधुवाद है, श्रावक-श्राविकाओं को भी साधुवाद है, जो उस विधान का पालन करते आ रहे हैं। विधान बनाने वाला बना दे, किन्तु पालने वाले उसे न पालें तो विधान का क्या महत्त्व? स्वामीजी के द्वारा लिखित यह पत्र तो बोलता नहीं कि साधु-साध्वियो! तुम ऐसा करो। इसमें जो लिखा हुआ है, कोई उसे पढ़े और उसका पालन करे, तभी इसकी महत्ता है। पत्र कभी किसी को हाथ पकड़ कर नहीं कहता कि तुम हमारे कहे हुए का पालन करो। आचार्य भले ही किसी का हाथ पकड़ लें, अनुशासन करें, लेकिन पत्र तो कभी किसी का हाथ पकड़ कर उसे विवश नहीं करता। पन्ने में लिखी हुई मर्यादाओं के प्रति आस्था है तो वह आस्था अपने आप में बड़ी चीज होती है। इस मायने में साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं की यह महत्ता होती है, गुणवत्ता होती है कि वे पन्ने में लिखी मर्यादाओं के प्रति सम्मान की भावना रखते हैं और आचार्यों की आज्ञा के अंतर्गत रहते हैं। यहां गुरु के अलावा कोई किसी का शिष्य-शिष्या नहीं होता। आप देखें कि हमारी साध्वीप्रमुखा पांच सौ से भी ज्यादा साध्वियों की देखरेख करती हैं। लेकिन साध्वियों से आप पूछें कि आप किसकी शिष्या हैं तो वे गुरु का ही नाम बताएंगी। (साध्वीप्रमुखाजी ने तत्काल बद्धांजलि खड़े होकर विनय भाव से निवेदन किया--**^e Lo; gh x# dh f"k";k g**) सब पर एकमात्र गुरु का आदेश चलता है। हमारी साध्वीप्रमुखाजी कितनी विदुषी हैं, साहित्य के क्षेत्र में कितना काम कर चुकी हैं और कर रही हैं, संघ की रीति-नीति की कितनी जानकार हैं और परमपूज्य गुरुदेव तुलसी जैसे तेजस्वी आचार्य के सान्निध्य में काम कर चुकी हैं, उनके द्वारा निर्मित हैं, बाद में आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में काम किया और अब भी काम कर रही हैं। किन्तु एक आचार्य के अनुशासन की बात उन पर भी लागू होती है। अभी उन्होंने स्वयं कहा कि मैं भी गुरु की शिष्या हूं। इस प्रकार वे भी आचार्य की आज्ञा में हैं। गुरु की आज्ञा में रहने में सुख है। अपना अहंकार करे, वह अच्छा नहीं। संघ की विधि के अनुसार उपयुक्त रूप में चलना बहुत बड़ी बात होती है।

चौथी धारा है--**vkpk; ;kX; 0;fDr dk nhf{kr djA nhf{kr dju ij Hkh dkb v;kX; fudy tk, ;k v;kX; yx rk ml l?k l vyx dj nA** दीक्षा का मतलब भीड़ एकत्र करना नहीं है। क्वांटिटी नहीं,

हमें क्वालिटी भी चाहिए। केवल भीड़ जुटाने का कोई मतलब नहीं है। हमें गुणवान और योग्य व्यक्ति चाहिए, विनीत चाहिए, आचारनिष्ठ चाहिए। हमारे साधु-साध्वियां इंगित के प्रति कितने जागरूक रहते हैं। आदेश हो गया कि तुम मुम्बई, रतलाम, पूना जाओ या साउथ में जाओ तो आदेश के बाद उनके कदम आगे बढ़ जाते हैं। किसी को कह दिया कि मेवाड़ से कानपुर जाओ तो वह उधर की ओर कदम बढ़ा देता है। यह साधु-साध्वियों का कितना विनय है, उनका कितना समर्पण है कि वे गुरु की आज्ञा को इतना बहुमान, सम्मान देते हैं। हमारे पुरखों/पूर्वजों ने उनमें ऐसे संस्कार भरे हैं कि वे गुरु की आज्ञा के प्रति हमेशा जागरूक रहते हैं।

साधु-साध्वियों की बात तो है ही, श्रावक-श्राविकाओं की बात भी मैं कहूं तो उनमें भी गुरु की आज्ञा के प्रति कितना समर्पण का भाव है। कल मेरे पास मुनि कुमारश्रमणजी आदि साधु बैठे थे। कुछ लंबी चर्चा चली, काफी विचार-विमर्श होता रहा तो उन्होंने कहा कि गुरुदेव! हमारे संघ में तो एक आचार्य का इंगित चलता है। आपका इंगित होते ही उसके लिए साधु-साध्वियां और श्रावक-श्राविकाएं किस प्रकार समर्पित हो जाते हैं। आपके कारण ही साधु-साध्वियों के इंगित को भी महत्त्व मिलता है। साधु भी कोई बात आपके इंगित से कहेगा तब तो उसका महत्त्व है, अन्यथा किसी का भी क्या महत्त्व है?

हमारे श्रावक-श्राविकाओं में भी कितना समर्पण है। दूर बैठे वे गुरुओं और आचार्यों के इंगित की प्रतीक्षा करते हैं। इंगित मिल जाए तो उसके प्रति अपना अहोभाव व्यक्त करते हैं। श्रावक-श्राविकाएं भले साउथ में रहते हों, भले पूर्वांचल में या और कहीं रहते हों, पर वे भी किसी सीमा तक आचार्यों से जुड़े रहते हैं, आचार्यों की डोर से बंधे रहते हैं। गलती होने पर श्रावक-श्राविकाओं को भी कभी कुछ कड़ा कहा जा सकता है कि ऐसा तुमने कैसे किया? मर्यादा के विपरीत कोई काम कर ले तो उनको भी कड़ा कहा जा सकता है। साधु-साध्वियों को उलाहना दिया जा सकता है तो श्रावक-श्राविकाओं को भी उलाहना दिया जा सकता है। उलाहना मिले तो उसे कितने विनय भाव से झेला जाता है और झेलना चाहिए। गुरु के उलाहने को बड़े सम्मान के साथ झेलना चाहिए और आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि मेरे द्वारा कोई भूल तो नहीं हो गई। आचार्यों का उलाहना मिले तो उसे साधु-साध्वियां ही नहीं, श्रावक-श्राविकाएं भी किस प्रकार झेलते हैं और सबको झेलना भी चाहिए। यह विनय भाव भी संघ की नींव को मजबूत बनाता है। संघ की सुव्यवस्था को बनाए रखने के लिए इसकी भी अपेक्षा रहती है।

दीक्षित करो तो योग्य व्यक्ति को करो। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी २०१३-१४ में मनाई जानेवाली है। मैंने शताब्दी वर्ष में सौ दीक्षाओं का टारगेट रखा है। एक लक्ष्य बनाया है, भावना की है कि उस वर्ष सौ दीक्षाएं हमारे संघ में हों। लेकिन लक्ष्य बनाने का मतलब यह नहीं कि भीड़ इकट्ठी कर लूं। सौ नहीं, भले ही हमें दो ही मिलें, लेकिन योग्य मिलें। अयोग्य सौ नहीं, हमें तो अयोग्य एक भी नहीं चाहिए। हम जितने हैं, उतने ही ठीक हैं, लेकिन अयोग्य नहीं चाहिए। सौ योग्य व्यक्ति मिलें, यह हमारी कामना है। क्वांटिटी हो, किन्तु क्वालिटी के साथ हो।

इस प्रकार योग्यता और गुणवत्तायुक्त व्यक्ति होने चाहिए। अगर किसी के बारे में लगे कि बिल्कुल अयोग्य व्यक्ति है तो उसको उचित तरीके से संघ से अलग भी किया जा सकता है। संघ से अलग कर देने के बाद पूरा संघ उसको उस रूप में सम्मान, बहुमान न दे जो सम्मान, बहुमान संघ में रहने पर उसे प्राप्त था। संघ से अलग हो गया तो उसके साथ हमारा कोई द्वेष नहीं, उसके साथ कोई कटुता नहीं, पर जो सम्मान संघ के साधु-साध्वियों को प्राप्त है, वह सम्मान उसे नहीं दिया जाना चाहिए। बिना इंगित के ऐसे लोगों के पास आना-जाना, उनके साथ रहना, उनसे संवाद स्थापित करना उचित नहीं। संघीय संबंध उनके साथ नहीं रखना चाहिए।

पांचवीं मर्यादा जो बड़ी महत्त्वपूर्ण है, वह यह कि आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुनें तो उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें। भविष्य में आचार्य कौन होगा? इसका निर्णय वर्तमान

आचार्य को करना होता है, जैसे परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अपनी विद्यमानता में निर्णय किया कि मेरे उत्तराधिकारी महाप्रज्ञ होंगे। कोई पंचायत नहीं, कोई वोटिंग नहीं, और यहां तक कि आचार्य को किसी से पूछने की भी आवश्यकता नहीं। किसी को भी बिना पूछे, बिना परामर्श के आचार्य अपना उत्तराधिकारी घोषित कर सकते हैं। सर्वाधिकार एकमात्र आचार्य को प्राप्त है। जिसका नाम वे घोषित कर दें या लिख कर छोड़ दें, उस व्यक्ति को पूरा धर्मसंघ आचार्य के रूप में सहर्ष स्वीकार करे। उस पर कोई तर्क नहीं, कोई प्रश्न नहीं। आचार्य जिसे बना दें, उनकी इच्छा।

ये पांच मर्यादाएं ऐसी हैं, जो तेरापंथ संगठन और शासन की मानों स्तंभरूप हैं। मर्यादाओं के इन सुदृढ़ स्तंभों पर तेरापंथ का प्रासाद टिका हुआ है। इसलिए हम सभी अपनी स्वीकृत मर्यादाओं के प्रति, अपने आचार के प्रति जागरूक रहें और उनके अनुसार आगे बढ़ने का प्रयास करें। जहां आचार का सम्यक् पालन है, मर्यादाओं का सम्यक पालन है, वहां विकास की भी संभावना हो सकती है। जहां अनुशासन नहीं, मर्यादा नहीं, आचार नहीं, वहां तो पतन की ही बात हो सकती है।

जैन शासन और उसमें भी हमारा यह तेरापंथ धर्मसंघ जिसके हम सदस्य और अनुयायी हैं और भिक्षु स्वामी की कृपा कहें या अपना सौभाग्य कहें, ऐसा धर्मशासन हमें मिला है। कहा गया है--

pj.k j;.k fprke.kh] HkkX; iek.k ik;k cy fHk{k Loke iIkn
djMk gh dke iM dnk x.k e fFkj in jki] vk.kk ukfg fojkèk Ï

ऐसा शासन हमें मिला है। छोटी-मोटी बात को लेकर हमारे पैर कभी कमजोर नहीं होने चाहिए। संघ से पैर कभी बाहर न पड़ जाएं छोटी-मोटी बातों को लेकर। भावना यह हो कि संघ में जिएंगे, शासन में जिएंगे और सौ वर्षों के बाद शासन में ही मरेंगे। शासन के बाहर कभी हमारा पैर न जाए। थोड़ा कष्ट या कड़ाई भले भोग लें, डांट को भोग लें, उलाहना और अकृपा को भोग लें, किन्तु तुच्छ बातों को लेकर शासन के बाहर कभी पांव न पड़े, यह हमारा मजबूत संकल्प होना चाहिए। आचार्यों की कभी कृपा, कभी अकृपा तो कभी वापिस कृपा--यह सब यदा-कदा चलता रहता है। इस कृपा या अकृपा के आधार पर अपने मन को कभी कमजोर नहीं करना चाहिए, मजबूत रहना चाहिए और धर्मशासन के प्रति गहरी निष्ठा हम सभी के मन में रहनी चाहिए। हम संघ में अपनी साधना करें और साथ में संघ की सेवा करें। जितना संभव हो सके, संघ को सेवा देने का प्रयास करें। हमारी शक्ति, हमारा शरीर संघ की सेवा में लगे। संघ हमको कितना कुछ दे रहा है, संघ से हम कितनी सेवा ले रहे हैं तो हम संघ को यथासंभव सेवा देने का भी प्रयास करें।"

ije J); vkpk;Jh egkJe.k tIky dh vkj

ikyh ftykLrjh; Lokxr lekjkg

„^ Qjojh, राणकपुर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम पाली जिलास्तरीय स्वागत समारोह के रूप में समायोजित हुआ जिसमें पाली तेरापंथ कन्यामंडल, महिला मंडल, तेयुप के मंत्री श्री अनिल भंसाली, श्री डूंगरमल चोपड़ा, कन्यामंडल की संयोजिका प्रियंका कातरेला आदि ने अपने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त किए। राणकपुर मन्दिर ट्रस्ट की ओर से श्री प्रेमजी भाई टांक ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी।

पाली जिले के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री प्रसन्नकुमार खमेसरा ने अपने वक्तव्य में कहा--'यह हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि पाली जिले में आचार्यश्री के पावन चरण पड़े। आचार्यश्री की अहिंसा यात्रा पाली जिले की जनता के लिए निश्चित रूप से लाभदायी सिद्ध होगी। यदि तेरापंथ के जैसी समर्पण भावना हर व्यक्ति आत्मसात् कर ले तो राष्ट्र का नवनिर्माण हो जाएगा।'

पाली जिला कलेक्टर श्री नीरज के.पंवार ने अपने अभिभाषण में कहा--'हमारे लिए आज बहुत ही गौरव का क्षण है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के साथ पाली जिले में पधारे। संपूर्ण जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं। इस यात्रा के माध्यम से जिले की जनता में अहिंसा के मार्ग पर चलने का संकल्प जागेगा तथा पाली और आगे बढ़ेगा।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा--'मेवाड़ की जनता में अनुकंपा की चेतना जगाते हुए आज परमपूज्य आचार्यवर पाली जिले में पधारे हैं। इस जिले के लोगों में भी पूज्यवर के पदार्पण से उत्साह का वातावरण है। आचार्यवर अपनी यात्रा में अत्यधिक परिश्रम कर रहे हैं। अपने पसीने की बूंदों से मानों मोती उपजा रहे हैं। पाली जिले के लोग आचार्यवर के सपनों और संकल्पों को साकार बनाने हेतु कृतसंकल्प बनें और अपने संकल्प की क्रियान्विति करें।'

परम पावन आचार्यवर ने संबोधि के चौदहवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को अनासक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। मेवाड़ की यात्रा परिसंपन्न कर मारवाड़ आगमन के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने कहा--'हम लोग आज सुबह तक मेवाड़ में थे और अब मरुधर में हैं। लगभग एक वर्ष तक हमने मेवाड़ में परिभ्रमण किया। मुझे सात्विक संतोष है कि मैं मेवाड़ यात्रा की दृष्टि से बिल्कुल हल्का हो गया हूं। गुरुदेव के एक अधूरे कार्य को आज मैंने पूर्णतया संपन्न कर लिया है।

दीवेर में मेवाड़स्तरीय मंगलभावना समारोह में मैंने अनेक कार्यकर्ताओं का उल्लेख भी किया था। एक और कार्यकर्ता, जो मेवाड़ के तो नहीं हैं, किन्तु वर्षों से मेवाड़ में रह रहे हैं, वे हैं श्री पदमचन्दजी पटावरी। हालांकि मैं इन्हें पहले से जानता हूं, इस यात्रा में और देखा। मुझे एक जागरूक, चिंतनशील और अवसर पर अपना मंतव्य प्रस्तुत करने वाले श्रावक प्रतीत हुए। अखिल भारतीय स्तर के कार्यकर्ता के रूप में मैंने इन्हें देखा। यों तो ये थली में मोमासर के हैं, मेवाड़ प्रवासी हैं। किन्तु कार्यकर्ता कहीं रहे, उसके कार्य का महत्त्व होता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज हम मारवाड़ में आए हैं। मारवाड़ में आने का तात्पर्य है आचार्य भिक्षु की जन्मस्थली, संसारपक्षीय ससुरालस्थली, दीक्षास्थली और महाप्रयाणस्थली में आना। मारवाड़ में भी मैं गुरुदेव महाप्रज्ञजी के वचनों को पूरा करने के लक्ष्य से ही आया हूं। उनके द्वारा घोषित जसोल चतुर्मास और टापरा मर्यादा महोत्सव करने के उद्‌देश्य से जाते हुए मार्ग में पाली जिले में आए हैं। इस जिले में हमारा कुछ दिनों का प्रवास है। जिले की जनता इस प्रवास का पूरा लाभ उठाए। जनता में अहिंसा और नैतिकता के प्रति निष्ठा का भाव जागृत हो।'

आज के इस अवसर पर मेवाड़ के उदयपुर, आमेट, सेराप्रान्त, मारवाड़ के पाली जिला, जोधपुर और सिवांची-मालाणी आदि विविध क्षेत्रों से हजारों श्रद्धालु पूज्य सन्निधि में समुपस्थित हुए।

सायंकालीन आहार के उपरान्त पूज्यप्रवर राणकपुर मन्दिर में अवलोकनार्थ पधारे। ट्रस्ट के पदाधिकारियों और मन्दिर के पुजारियों ने मन्दिर के विषय में अवगति दी। भगवान आदिनाथ ऋषभ के इस ऐतिहासिक मन्दिर का निर्माण कार्य महाराणा कुंभा के मंत्री श्री धरणशाह द्वारा वि.सं.१४४६ में प्रारंभ करवाया गया जो वि.सं.१४९६ (५० वर्ष) में परिसंपन्न हुआ। पूज्यप्रवर ने १४४४ खंभों से युक्त इस भव्य मन्दिर की स्थापत्य कला का अवलोकन किया।

ifjlheu dj bPNkvk dk

„‰ QjojhA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः राणकपुर से सादड़ी के लिए विहार किया। मार्ग में मूर्तिपूजक मुनि दिव्यचन्द्रजी ने आचार्यवर से मुलाकात की। पूज्यवर से प्रेरणा प्राप्त कर हीरावा नामक मार्गवर्ती ग्राम और सादड़ी के अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, चिलम आदि के सेवन का परित्याग किया। नौ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर सादड़ी निवासी श्री जयंतीलाल गंभीरमल बाफणा परिवार के फार्म

हाउस में पधारे। बेंगलुरु में प्रवासित मूर्तिपूजक परिवार अपने यहां पूज्यप्रवर का प्रवास प्राप्त कर धन्यता की अनुभूति कर रहा था। पूरे परिवार ने बेंगलुरु से सादड़ी पहुंच कर आचार्यवर के दर्शन एवं उपासना का लाभ लिया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व श्री जयंतीलाल बाफणा, श्रीमती सूरज बाफणा और श्री शान्तिलाल रांका ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। बालोतरा से समागत श्रीमती कमलादेवी ओस्तवाल ने गीत के माध्यम से अपने भावों को प्रस्तुति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'गृहवासी हो या गृहत्यागी, धर्माराधना वही कर सकता है, जो आशा-लालसा को छोड़ने की दिशा में अग्रसर है। जैसे आकाश का कोई ओर-छोर नहीं होता, वैसे ही लालसा का कोई अंत नहीं होता। जिसके मन में संतोष का भाव जाग गया, उसे परम सुख की प्राप्ति हो सकती है। वृद्धावस्था में भी कई बार लालसा नहीं जाती। गृहस्थ ही नहीं, कई बार तो संन्यासी भी लालसा पाल लेता है और वह लालसा उसकी साधना को खत्म कर देती है। अतः उससे मुक्त रहकर साधना करनी चाहिए। व्यक्ति जितना आकांक्षाओं से मुक्त रहता है, अध्यात्म की दिशा में वह उतना ही आगे बढ़ जाता है।'

पूज्य आचार्यवर ने अनिच्छ, अल्पेच्छ और महेच्छ--इन तीन शब्दों का उल्लेख करते हुए कहा--'अनिच्छ तो कोई संत महात्मा भले बन जाए, गृहस्थ के लिए वैसा बनना बहुत कठिन है। किन्तु वह महेच्छ तो न बने। अपनी इच्छाओं का परिसीमन करे। इच्छाओं के परिसीमन के द्वारा गृहस्थ अपने जीवन को धार्मिक बना सकता है। गृहस्थ यदि बारहव्रतों को हृदयंगम कर लेता है तो वह अल्पेच्छ और धर्माराधना करने वाला बन सकता है। इसलिए जीवन में त्याग और संयम के विकास का प्रयास करें।

आज दिल्ली से समागत साहित्यकार श्री हरीश नवल ने आचार्यवर के दर्शन किए और अपनी विविध विषयक जिज्ञासाओं का आचार्यवर से समाधान प्राप्त किया।

ueLdkj egke=k dh vkRek g] ohrjkxrk

„Š QjojhA परमपूज्य आचार्यवर आज विहार से पूर्व सादड़ी ग्राम के भीतर पधारे और यहां के अनेक जैन घरों का स्पर्श किया। स्थानकवासी समाज द्वारा निर्मित महावीर भवन में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। स्थानकवासी समाज के उपाध्यक्ष श्री प्रवीण सोलंकी, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र बरलोटा आदि ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में लोगों को व्यवसाय में नैतिकता और व्यवहार में अहिंसा को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। परम श्रद्धेय आचार्यवर मूर्तिपूजक समाज द्वारा निर्मित विद्याशाला प्रांगण और न्याती नोहरा में भी पधारे। इस प्रकार लगभग दो किमी. की यात्रा के उपरान्त आचार्यवर मुण्डारा की ओर प्रस्थित हुए। लगभग नौ किमी. का विहार कर आचार्यवर मुण्डारा पधारे। यहां जैन अतिथि भवन 'चंपा विहार' में आचार्यवर का पावन प्रवास हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व चम्पा विहार ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री केसरमल जैन ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन वाङ्‌मय में सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप को मोक्ष का मार्ग बताया गया है। जहां सम्यक्‌दर्शन अर्थात् सम्यक् श्रद्धा होती है, वहां सम्यक् ज्ञान हो सकता है। यदि ये दोनों होते हैं तो सम्यक् चारित्र की अर्हता प्राप्त हो जाती है। जो अर्हत, शुद्ध साधु और जिनदेव द्वारा प्रज्ञप्त धर्म को क्रमशः अपने देव, गुरु और धर्म के रूप में स्वीकार करता है, उन पर श्रद्धा रखता है और जीव-अजीव आदि पदार्थों को सम्यक् रूप में जान लेता है, वह सम्यक्‌दर्शन को प्राप्त कर लेता है। उसके बाद सम्यक् ज्ञान होता है और तत्पश्चात् सम्यक् आचार का पालन किया जा सकता है। जिस जीवन में सम्यक् ज्ञान और पवित्र आचरण नहीं होता, वह उन्नति को प्राप्त नहीं

हो सकता। मानव जीवन बहुत मूल्यवान है। इसे व्यसनों और क्रोध, लोभ आदि में न गंवाएं। सम्यक्दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की आराधना के द्वारा आत्मकल्याण करते हुए इसे सुफल बनाएं।'

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने नमस्कार महामंत्र के महात्म्य के विषय में कहा--'जैन धर्म में नमस्कार महामंत्र का बहुत महत्त्व है। उसकी आत्मा वीतरागता है। यदि वीतरागता उसमें न रहे तो वह जड़वत् हो जाएगा। अर्हत और सिद्ध वीतराग होते हैं। आचार्य वीतराग धर्म का नेतृत्व और उसकी साधना करने वाले, उपाध्याय वीतराग वाणी का अध्ययन और अध्यापन करने वाले तथा साधु वीतराग अथवा वीतरागता की साधना करने वाले होते हैं। इस प्रकार पूरे नमस्कार महामंत्र में वीतरागता ही मुख्य है। इसमें किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। जिसमें गुणात्मक विकास है, उसे नमस्कार किया गया है। एक दृष्टि से यह असाम्प्रदायिक और बहुत ही उदार मंत्र है। इसके जप से आत्मकल्याण तो होता ही है, विघ्न-बाधाओं का निवारण भी हो सकता है।

आज मध्याह्न में स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी आचार्यवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यवर ने विद्यार्थियों को पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से छात्र-छात्राओं ने नशामुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया। सायंकालीन आहार के पश्चात् परम श्रद्धास्पद आचार्यवर लोगों की प्रार्थना पर अनेक जैन घरों में पधारे।

v.kor dk vkjkèk

„‹ QjojhA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः विहार से पूर्व मुण्डारा में मूर्तिपूजक श्रावकों की बलवती प्रार्थना पर विहार-पथ से विपरीत दिशा में लगभग पौन किमी. दूर स्थित आदिनाथ मंदिर में पधारे। इस प्रकार लगभग डेढ़ किमी. की यात्रा के पश्चात् आचार्यवर रमणीया की ओर प्रस्थित हुए और ११-०१ किमी. का विहार कर रमणीया पधारे। यहां आपका प्रवास 'श्री आनंदधाम' में हुआ। यह शान्त और रमणीय स्थान एकान्त साधना की दृष्टि से अपनी उपयोगिता सिद्ध करता-सा प्रतीत हो रहा था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'धर्म के दो प्रकार बताए गए हैं--महाव्रत और अणुव्रत। साधु महाव्रतात्मक और श्रावक अणुव्रतात्मक धर्म का पालन करता है। ये दोनों ही धर्म हैं। किन्तु आचरण की क्षमता के अनुसार दो भेद कर लिए गए। पूर्णतया धर्माराधना महाव्रतों और आंशिक धर्माराधना अणुव्रतों की साधना है। साधु और गृहस्थ--दोनों को धर्म का अधिकार है। किन्तु साधु जहां अहिंसा, सत्य आदि पांच व्रतों को पूर्णतया स्वीकार कर लेता है, वहीं गृहस्थ के लिए वैसा करना कठिन होता है। अतः उसके लिए अणुव्रतों में उन्हीं पांच व्रतों की आंशिक साधना का विधान किया गया। श्रावक यह सोचे कि मुनि धन्य हैं, जो महाव्रतों का पालन करते हैं। मुझे भी कभी महाव्रतों को स्वीकार करना है। किन्तु अभी वह मेरे लिए कठिन है, इसलिए अभी मैं अणुव्रतों की साधना करूं।'

उपस्थित जनसमूह को अणुव्रतों को हृदयंगम करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'गृहस्थ के लिए अणुव्रतों की साधना सरल और सुसाध्य होती है। उन्हें कुछ आसानी से स्वीकार किया जा सकता है। व्यक्ति अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास करे। यथासंभव झूठ का परिहार करे। व्यवसाय और व्यवहार में यथासंभव प्रामाणिकता का प्रयोग करे। थोड़ी कठिनाई को भले झेलना पड़े, किन्तु सत्यनिष्ठा को न छोड़े। दूसरों के धन को धूलि के समान समझे। चोरी करना, दूसरे के स्वत्व को हड़पना है। सद्गृहस्थ उसका परित्याग करे व ब्रह्मचर्य के संबंध में भी अपनी सीमा रखे। स्वदार संतोष और स्वपति संतोष व्रत का पालन करे, इन्द्रिय संयम का विकास करे। अपरिग्रह व्रत को भी गृहस्थ के लिए पूर्णतया स्वीकार करना कठिन होता है। अतः वह अपनी इच्छाओं का परिमाण करे। यह अणुव्रतों की साधना भी आंशिक संयम की साधना है। इन्हें स्वीकार कर भी गृहस्थ आत्मकल्याण की दिशा में प्रस्थान कर सकता है।'

vVBkou o"k ckn jkuh e rjkiFk d vkpk;l dk ikou inki.k

f ekpA परम पावन आचार्यवर ने आज प्रातः रमणीया से रानी के लिए विहार किया। मार्गवर्ती माताजी रो बाड़ो नामक ढाणी के चौधरी परिवार के अनुरोध पर आचार्यवर ने उसके घर को अपनी पदरज से पावन किया।

६.०७ किमी. का विहार कर आचार्यवर रानी स्टेशन पधारे। ५८ वर्ष बाद गांव में अपने आराध्य के पावन पदार्पण से यहां का तेरापंथ समाज अतिशय उल्लसित और उत्साहित था। चारों ओर प्रसन्नता का वातावरण था। रानी स्टेशन का यह प्रवेश पूज्यप्रवर द्वारा इक्कीस वर्ष पूर्व महाश्रमण अवस्था में की गई अपनी सिवांची-मालाणी यात्रा के उपरान्त रानी पदार्पण की स्मृति करा रहा था। आचार्यवर स्वागत-जुलूस के मध्य नगरपालिका भवन में पधारे। नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती मनीषा जैन, उपाध्यक्ष श्री नूर मोहम्मद, प्रतिपक्ष के नेता श्री डालचन्द चौहान के साथ स्थानीय पार्षदों ने पूज्यचरण का अभिनंदन किया। एस. आई. श्री रवीन्द्रजी चारण के निवेदन पर स्थानीय पुलिस थाना भी पूज्यवर के पदार्पण से पावन बना। पूज्यवर का द्विदिवसीय प्रवास स्थानीय अणुव्रत भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के माध्यम से पूज्यवर का स्वागत किया। श्री धनराज सुराणा, श्री उगमराज सेठिया, श्रीमती भाग्यवंती धोका आदि ने आराध्य की अभ्यर्थना में अपने भाव सुमन अर्पित किए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

सरदारपुरा जोधपुर चतुर्मास संपन्न कर आज गुरु-सन्निधि में पहुंचे शासनश्री मुनि रवीन्द्रकुमारजी व उनके सहवर्ती मुनि दिनकरजी ने अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी तथा उनकी प्रेरणा से भरे गए शताधिक बारहव्रती श्रावकों के संकल्प पत्र, अणुव्रत तथा नशामुक्ति के संकल्प पत्र पूज्यवर को उपहृत किए गए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'प्राणी प्रवृत्ति करता है। वह दो प्रकार की होती है--सत् और असत्। मोक्ष प्राप्ति हेतु दोनों प्रकार की प्रवृत्ति से पूर्णतया निवृत्त होना आवश्यक है। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक मुक्ति का वरण नहीं किया जा सकता। किन्तु वह तो साधना का शिखर है और वहां तक एक साथ पहुंचना बहुत कठिन होता है। अतः उस मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए पहले असत् से निवृत्ति करनी होगी अर्थात् हिंसा, झूठ, चोरी आदि पापों से मुक्त बनना होगा। साधु असत् प्रवृत्ति का तीन करण, तीन योग से आजीवन परित्यागी होता है। गृहस्थ के लिए असत् से पूर्णतया निवृत्ति बहुत कठिन है। बारहव्रत और अणुव्रत को स्वीकार करने का अर्थ है काफी अंशों में असत् का परित्याग करना। जीवन में अहिंसा और नैतिकता होती है तो मानना चाहिए कि कुछ अंशों में सत् का विकास और असत् का परित्याग हुआ है।'

पूज्यवर ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा--'धोखा मानवता के अनुरूप कार्य नहीं है। व्यवसाय में पारदर्शिता रहे, धोखाधड़ी न हो। यदि परस्पर धोखाधड़ी चलती है तो वह आत्मा के लिए तो नुकसानदेह होती ही है, समाज के लिए भी घातक होती है। इसी प्रकार घरेलू हिंसा चलती है, कलह चलता है, संपत्ति के बंटवारे को लेकर पारिवारिक सदस्यों में परस्पर तनाव हो जाता है। ये सब असत् प्रवृत्तियां हैं। यदि संकल्प का बल हो तो काफी अंशों में असत् प्रवृत्ति से बचा जा सकता है। जैसे घोड़े की लगाम हाथ में होती है तो उसे नियंत्रित किया जा सकता है, वैसे ही मनरूपी अश्व को ज्ञानरूपी लगाम के द्वारा असत् से निवृत्त बनाकर सत् में रखने का प्रयास करना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आज शासनश्री मुनिश्री रवीन्द्रकुमारजी स्वामी पधारे हैं। मैंने देखा--ये साधना में रुचि रखने वाले और शासन के प्रति निष्ठा रखने वाले संत हैं। गत वर्ष राजलदेसर में मैंने इन्हें शासनश्री के रूप में स्वीकार किया था। मुनि दिनकरजी इनके साथ हैं। ये एकान्तर तपस्या कर रहे हैं और मुनिश्री

रवीन्द्रकुमारजी प्रायः एकाशन करते हैं। अच्छा संयोग मिला है। दोनों संत अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए खूब अच्छी साधना और अच्छा कार्य करते रहें।' आचार्यवर ने अपने प्रवचन के मध्य रानी के श्रावक स्वर्गीय जुगराजजी बम्बोली और स्वर्गीय खींवराजजी का उल्लेख भी किया।

वाव तेरापंथ समाज के बारह नवदंपति सामूहिक विवाह के उपरान्त आज परमपूज्यवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुए। नवदंपतियों को पूज्यवर का पावन संबोध प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में आचार्यवर ने उन्हें तेरापंथ की गुरुधारणा करवाई। रानी के बीस व्यक्तियों ने आचार्यवर के पदार्पण के उपलक्ष्य में नमस्कार महामंत्र का सवा लाख जप करने का संकल्प अभिव्यक्त किया।

आज बीकानेर के लालबाबा पूज्यवर की मंगल सन्निधि में पहुंचे और विविध विषयों पर वार्तालाप किया। अपराह्न में मूर्तिपूजक आचार्य जयंतसेनसूरीश्वर के शिष्य मुनि संयमरत्नविजयजी और मुनि भुवनरत्नविजयजी ने पूज्यवर से भेंट की।

iokl e Hkh gvk fogkj

„ ekpA रानी स्टेशन प्रवास का दूसरा दिन। इस द्विदिवसीय प्रवास के दौरान भी पूज्यवर की यात्रा का क्रम जारी रहा। प्रवास स्थल से लगभग तीन किमी. दूर स्थित विद्यावाड़ी के कार्यकर्ताओं की भावपूर्ण प्रार्थना पर पूज्यवर आज प्रातः वहां पधारे। मरुधर महिला शिक्षण संघ द्वारा संचालित इस संस्थान के सहमंत्री श्री हरीश सुराणा, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र धोका, डायरेक्टर डा. एन.एस.राठौड़, एज्युकेशन डायरेक्टर श्रीमती सुलक्षणा बलठाकुर आदि पदाधिकारियों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत करते हुए संस्थान के विषय में अवगति दी। पूज्यवर ने संस्थान के विभिन्न भवनों का अवलोकन किया। परिसर में स्थित लीलादेवी पारसमल संचेती कन्या महाविद्यालय में पूज्यवर का संक्षिप्त प्रवास हुआ।

विद्यावाड़ी के रजतजयंती हॉल में आयोजित कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। संस्थान की ओर से सहमंत्री श्री हरीश सुराणा और श्री अभयचन्द परमार ने पूज्यवर के स्वागत में भावपूर्ण अभिव्यक्ति देते हुए अभिनंदन पत्र समर्पित किया। साध्वी चारित्रयशाजी ने गीत के माध्यम से छात्राओं को उत्प्रेरित किया। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी और मुनि धर्मरुचिजी के प्रेरक संभाषण हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा--'आज हम विद्या के मंदिर में आए हैं। यहां शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर सरस्वती की प्रायोगिक आराधना करते हैं। विद्या के दो प्रकार हैं--लौकिक और अलौकिक। खगोल, भूगोल आदि लौकिक विद्या के अन्तर्गत आते हैं, जबकि अलौकिक विद्या का अर्थ है अध्यात्म विद्या। विद्यालय में लौकिक विद्या का प्रशिक्षण दिया जाता है। उसके साथ अलौकिक विद्या का प्रशिक्षण दिया जाए तो संतुलन स्थापित हो सकता है। यदि केवल लौकिक विद्या हो और संस्कार नहीं हो तो जीवन में एक बड़ी कमी रह जाती है। विद्यार्थियों में ज्ञान और सदाचार--दोनों का विकास हो। यदि जीवन में इन दोनों का विकास होता है तो व्यक्ति महापुरुष बन जाता है। मैं मंगलकामना करता हूं कि ये बालिकाएं खूब विकास करें और परिवार, समाज तथा देश के लिए समाधायक बनें।'

विद्यावाड़ी से प्रवास स्थल की ओर लौटते हुए पूज्यप्रवर मूर्तिपूजक साधुओं के अनुरोध पर स्थानीय दादावाड़ी में भी पधारे। इस प्रकार कड़ी धूप में लगभग छह किमी. की यात्रा के उपरान्त पूज्यप्रवर पुनः प्रवास स्थल पर पधारे और कुछ ही क्षणों में प्रवचन स्थल पर पधार गए। आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में उपस्थित जनमेदिनी को अनासक्त रहने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर के प्रवचन के पश्चात् डा.मंजु नाहटा ने विचार व्यक्त करते हुए अपना शोधग्रंथ 'अनेकान्तवाद

थ्रू पेंटिंग्स' पूज्यवर को उपहृत किया। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने अपने उद्गार व्यक्त किए। अमृतम् मीडिया पब्लिसिटी प्रा.लि. के कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर की अहिंसा यात्रा के दौरान वितरित की जा रही शिक्षण सामग्री के किट विद्यार्थियों को प्रदान किए।

पूज्यवर ने भेंट की गई कृति के संदर्भ में कहा--'मंजुजी जैन विद्या के स्कॉलर तैयार करने में जो योगदान दे रही हैं, वह महत्त्वपूर्ण बात है। जैन स्कॉलर तैयार करना एक प्रकार से जैन वाङ्मय की सेवा है। इन्होंने अपना विकास किया है और आगे भी विकास करना है। खेमचन्दजी सेठिया जैसे श्रावक, जो समाज के प्रथम कोटि के व्यक्तियों में एक हैं, उन्होंने बहुत सेवा की है, जैन विश्वभारती पर इतना ध्यान दिया, गुरुदेव तुलसी की यात्रा में कितना कार्य किया, अब तो वे वयःप्राप्त हो गए हैं। उन जैसे एक उल्लेखनीय और स्तवनीय श्रावक की सुपुत्री मंजुजी अभी नाहटा परिवार में हैं। मेरा अनुमान है कि इनके विकास में परिवार का भी सहयोग है। ये खूब अच्छा विकास करती रहें। इन्हें जैन विदुषी तो संभवतः अभी भी कहा जा सकता है। ये और ज्यादा आगे बढ़ने का प्रयास करें।'

आज मध्याह्न में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की नवगठित कार्यकारिणी की प्रथम संगोष्ठी समायोजित हुई। संगोष्ठी से पहले कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण किया।

रानी में तेरापंथ समाज के तीस परिवार हैं। पूज्यवर के द्विदिवसीय प्रवास हेतु सभी प्रवासी परिवार रानी पहुंचे और पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। पूज्यवर ने श्रद्धालुओं को निकट उपासना का अवसर प्रदान किया और दूसरे दिन सायंकाल उनके घरों का स्पर्श भी किया। इस दौरान अनेक अन्य जैन घरों में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। अवशिष्ट श्रद्धालुओं के घर विहार से पूर्व पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने।

ojdk.kk e ikou inki.k

… ekpA परमाराध्य आचार्यवर ने आज प्रातः रानी से वरकाणा के लिए विहार किया। मार्गवर्ती बिजोवा गांव में आदर्श जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के श्री विमल जैन की बलवती प्रार्थना पर पूज्यप्रवर ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री पार्श्व गोशाला पधारे। एक व्यक्ति की भावना साकार करने हेतु करुणानिधान आचार्यवर ने दो किमी. का अतिरिक्त विहार किया। आचार्यवर आज कुल सात किमी. का विहार कर वरकाणा स्थित श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय में पधारे। संस्थान के कार्यकर्ताओं और छात्रावास के छात्रों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। बुलंद जयघोष छात्रों के आन्तरिक उल्लास को अभिव्यक्त कर रहे थे। आचार्यवर का प्रवास परिसर में स्थित अतिथि भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय महिलाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। केलवा से समागत तेरापंथ महिला मंडल ने गीत के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। संस्थान के उपाध्यक्ष श्री फतेहचन्द एन.राणावत और महामंत्री श्री नवरतन मेहता ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए पूज्यवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सामायिक के महात्म्य को प्रतिपादित करते हुए श्रावक समाज को अधिकाधिक इस आध्यात्मिक अनुष्ठान में स्वयं को नियोजित करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों विद्यार्थियों ने आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

पूज्यवर सायंकालीन आहार के पश्चात् संस्थान में कार्यरत जैन श्रावकों के घरों में पधारे और संस्थान के विभिन्न भवनों का अवलोकन करते हुए उनके विषय में अवगति प्राप्त की। इस दौरान छात्रावास में अवस्थित प्राथमिक कक्षास्तरीय छात्रों ने पूज्यवर के समक्ष अपने धार्मिक उपक्रमों को प्रायोगिक प्रस्तुति दी। पूज्यवर ने उनसे अंग्रेजी भाषा में वार्तालाप करते हुए उन्हें पावन संबोध प्रदान किया।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

vu'ku e nh{kk

५ मार्च २०१२ को विराटनगर (नेपाल) में परमपूज्य आचार्यवर की अनुज्ञा से साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने अनशनरत श्राविका इन्द्रादेवी कुंडलिया को साध्वी दीक्षा प्रदान की है। पूज्यवर के निर्देशानुसार नवदीक्षित साध्वी का नाम साध्वी अमृतश्री रखा गया है। नवदीक्षित साध्वीजी का अनशनक्रम यथावत् जारी है।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

२५००/- श्री बाबूभाई संघवी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कानूवेन संघवी, कच्छ (गुजरात) को पूज्यप्रवर द्वारा 'महादानी' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र धीरजभाई, चंदूभाई, कांतिभाई, जिगर, मिलन एवं सुपौत्र राकेश, आदर्श आगम संघवी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती रायकंवरीदेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व.केवलचन्दजी सेठिया, मोमासर-फारबिसगंज) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू इन्द्रचन्द-माणकदेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू मनीष-सुधा, प्रपौत्र शुभम, ऋषभ सेठिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. मोतीलालजी धर्मचन्दजी माण्डोत, स्व. श्रीमती विष्णुकान्ता मोतीलालजी माण्डोत व स्व. गौतमचन्दजी धर्मचन्दजी माण्डोत, चिताम्बा (राज.) दापोली-खेड़ (महा.) की पुण्यस्मृति में उनके भ्राता शंकरलाल-पुष्पादेवी, श्रीमती मंजुदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू दिलखुश-संगीता, विजय-चंचल, किशोर-अल्पा, सचिन-खुशी, सुपौत्री व सुपौत्र विधि, विशेष, तक्षु, कनक, सनवी, अर्हम, दर्श, धैर्य माण्डोत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री चांदमलजी बाफना (पूर्व अध्यक्ष-सभा आसीन्द) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू राकेश-रीना, सुशील-उर्मिला, दिनेश-रचना, सुपौत्र केनित, जेनित, सुपौत्री शेफाली, जेनिशा बाफना, घाटकोपर-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री चांदमलजी मेहर (कुकरखेड़ा) के घुटनों के सफल ऑप्रेशन के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र पारसमल, रमेशचन्द, कैलाशचन्द मेहर, उधना-सूरत व पनवेल चौक (महा.) द्वारा प्रदत्त।

- ☐ श्री अभय जैन छाजेड़ व उनके सुपुत्र अक्षयकुमार (भीलवाड़ा-घाटकोपर, मुम्बई) ने आदर्श साहित्य संघ, शिविर कार्यालय को नया कम्प्यूटर मॉनिटर प्रदान किया है, हार्दिक आभार।

विज्ञप्ति के जिन सदस्यों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो गया है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण शीघ्र करवा लें। आजीवन या वार्षिक शुल्क हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय को प्रेषित किया जा सकता है। इसे आदर्श साहित्य संघ के एकाउंट नं.०१३३०००१००३६८३५६ (पीएनबी) में भी जमा करा सकते हैं।

d'koilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&Jh fHk{k lekf/k LFky lLFkku
ik- flfj;kjh&306027] ft-ikyh ¼jktLFkku½ Qku % 09680055381] 09352404641
fnYyh dk;ky; dk Qku 011&23234641 Email : adarshsahityasangh@yahoo.com
idk'ku fnukd % 10&3&2012

●

vkn'k lkfgR; l?k] 210] nhun;ky mik/;k; ekx] ub fnYyh&110002 dh vksj ls] cPNjkt dBkfr;k VLVh }kjk idkf'kr rFkk iou fiVI] uohu 'kkgnjk] fnYyh&110032 ls efnrA lEiknd % **d'koilkn pronhA**